International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 08-11-2025, Accepted: 07-12-2025, Published: 22-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 71-76

नामक्कुल रामलिंगम् पिल्लै

डॉ. श्री विद्या बालसुब्रमणियन
श्री राम नगर मेन रोड, नोलम्बूर, मुथैपेर वेस्ट, चेन्नई, तमिलनाडु भारत

सारांश
नामक्कल रामलिंगम पिल्लै ने कलम को अपना अस्त्र बनाया। रामलिंगम पिल्लै का जन्म भले ही दक्षिण में हुआ हो, पर वे तो भारतीय साहित्यकार थे। सन् 1971 में भारत सरकार ने उन्हें साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा दिए गए योगदान हेतु पद्मभूषण से सम्मानित किया था।

वेंकटराम रामलिंगम पिल्लै, जिन्हें 'नामक्कल कविज्ञ' के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म 19 अक्टूबर 1888 को तमिलनाडु के नामक्कल जिले के मोहत्तूर में हुआ। उनके पिता वेंकटरामन् थे और माता अम्मानियम्मल थीं। उनके पिता मोहत्तूर में पुलिस विभाग में कार्यरत थे और उनकी माँ एक धर्मपरायण महिला थीं। अपने माता–पिता के रामलिंगम पिल्लै आठवीं संतान थे।

रामलिंगम की स्कूली शिक्षा नामक्कल और कोयंबत्तूर में हुई। उन्होंने सन 1909 में तिरुच्ची के बिशप हीबर कॉलेज से बी. ए. किया। शुरुआत में उन्होंने नामक्कल तहसीलदार के कार्यालय में एक लिपिक के रूप में काम किया और बाद में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक बने। रामलिंगम पिल्लै ने देशभक्ति की सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं।

मूल शब्दः वेंकटराम रामलिंगम पिल्लै, नामक्कल कविरत्न, भारतीय साहित्यकार, देशभक्ति कविताएँ, तमिलनाडु, नामक्कल जिला

प्रस्तावना

झाँसी रानी लक्ष्मी बाई के नेतृत्व में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 में हुआ, पर उससे पहले तमिलनाडु में स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हो गई थी। झाँसी रानी का जन्म 19 नवंबर 1928 में हुआ और अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध उसने सन् 1857 में किया और उसकी मृत्यु 18 जून 1858 को हुआ।

मगर उससे पहले ही तमिलनाडु में अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हो गई थी और अंग्रेजों ने तमिलनाडु के उन स्वतंत्रता सेनानियों में से किसी को फाँसी पर चढ़ा दिया तो किसी को बंदूक से उड़ा दिया और किसी को तोप से भून डाला। मगर खेद की बात है कि इस बात को इतिहास के सामने प्रकट करने में तमिल भाषी लोग असमर्थ रह गए हों या भारतीय साहित्यकारों ने दक्षिण को इसका श्रेय देना न चाहा हो। मैं इस तरह का उल्लेख इसलिए करती हूँ कि झाँसी रानी के पहले तमिलनाडु में एक नहीं तीन–तीन महान स्वतंत्रता सेनानी शहीद हुए हैं।

तमिलनाडु का मावीरन् (महान वीर) अल्अहुमुत्तुक्रोन् जिसका जन्म 11 जुलाई 1710 और मृत्यु 19 जुलाई 1759 को हुआ, वही भारत का प्रथम स्वतंत्रता सेनानी था। उस प्रथम स्वतंत्रता सेनानी ने 1750–1756 में अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की और अंग्रेजों के विरुद्ध आम जनता में विद्रोह की भावना पैदा की। यादव वंश में जन्मा वह अल्अहुमुत्तुक्रोन् एट्टय्यपुरम में सेना नायक था। ब्रिटिश सरकार ने उसे बंदी बनाया और तोप से बाँधकर उड़ा दिया।

तमिलनाडु का दूसरा स्वतंत्रता सेनानी था पूलितेवन् वह नेरूक्कटुम् सेम्बुलै नामक स्थान को राजधानी बनाकर शासन करता था। पूलितेवन् सन् 1751 में ही "अंग्रेजों, भारत छोड़ो" कहकर आंदोलन किया। पूलितेवन् अंग्रेजों के विरुद्ध 12 साल में 15 बार युद्ध कर विजयी भी बना था। पर सन् 1767 में अंग्रेजों से युद्ध करते–करते हारा और वह मारा गया।

तमिलनाडु के पाचालंकुरिच्चि (राजवाड़ा) वीरपाण्डिय कट्टबोम्मन् था। अंग्रेजों ने उससे कर माँगा तो उसने अंग्रेजों पूछा– "किससे माँगते हो कर? क्या हमारे साथ खेत में गए?... क्या ढेंकली चलायी?... क्या सिंचाई की?... क्या हमारे विशाल खेत पर काम किया?... क्या यहाँ क्रीडा करती हमारे कुल की महिलाओं के लिए हल्दी पीसकर दिया? क्या तुम हमारे मामा हो या माला? निर्लज्ज, किससे माँगते कर?" उसकी यह बात सुनकर अंग्रेजों को गुस्सा आया। पर उसे अंग्रेज किसी तरह वश में नहीं कर सके। आखिर अंग्रेजों ने षड्यन्त्र रचा। पुदुक्कोटै के राजा एट्टप्पन् का मित्र था कट्टबोम्मन्। एट्टप्पन् द्वारा चालाकी की कट्टबोम्मन् को बंदी बनाया। उसे कयत्तार में 16 अक्टूबर सन् 1799 को अंग्रेजों ने फाँसी पर लटका दिया।

चित्ता मरदु और पेरिय मरदु दोनों भाई–भाई थे जो शिवगंगा के कालैय्यार कोइल में शासन करते थे। 1785 से 1801 तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने वाले इन दोनों को सन् 1801 में अंग्रेजों ने फाँसी पर चढ़ा दिया।

स्मरण करने की बात यह है कि ये सारे स्वतंत्रता सेनानी सन् 1857 के पहले के थे और तमिलनाडु के थे जो अंग्रेजों से लड़कर शहीद हुए। खेद की बात है कि भारतीय इतिहास में इसका उल्लेख कहीं नहीं है। शायद इतिहासकारों के सामने इस बात को प्रकट करने में तमिल लोग असमर्थ रहे हों या इतिहासकारों ने इस बात को छिपा दिया हो।

तमिलनाडु के उपर्युक्त इन महान वीरों ने अपने शहीद होने की कहानी तलवार से लिखी तो गांधीजी के नेतृत्व में हुए स्वतंत्रता संग्राम के आधुनिक काल में तमिलनाडु के सैंकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने त्याग और समर्पण से इतिहास रचा है। तमिलनाडु के करीब 152 स्वतंत्रता सेनानियों की सूची आज भी हमारे पास है। सैंकड़ों–सैंकड़ों सेनानियों का विवरण अब भी पता नहीं है। ऐसे शहीद पुरुषों में कुछ उल्लेखनीय हैं सुब्रह्मण्य भारती, भारतीदासन, नामक्कुल कवि रामलिंगम् पिल्लै। इन सेनानियों ने अपने तीखे शब्द बाणों से अंग्रेजों को बहुत चोट पहुँचाई।

क्रांतिकारी कविः हम नामक्कुल कवि रामलिंगम् पिल्लै के इन शब्दों के साथ उनका परिचय आरम्भ करेंगे। कवि कहते हैं–

पुरट्चि वेण्डुम् पुरट्चि वेण्डुम्
पुरट्चि वेण्डुमडा
पुरट्चि ऐन्नुम् सॊल्लिन् पॊरुळिलुम्
पुरट्चि वेण्डुमड़ा"

क्रांति चाहिए रे। कहकर एक क्रांतिकारी के रूप में उपस्थित होता है कवि नामक्कुल रामलिंगम् पिल्लै।

सुब्रह्मण्य भारती के रिक्त स्थान की पूर्ति: यह सच है कि गांधीजी के स्वतंत्रता आंदोलन में तमिलनाडु में आगे बढ़ाने वाले राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती थे। मगर उनके देहावसान के बाद उनकी जगह पर एक रिक्त स्थान हो गया था। इस बात पर राजाजी भी बहुत चिंतित थे।

पर संयोग से उस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उभरे थे कवि नामक्कुल वे. रामलिंगम् पिल्लै। जब महात्मा गांधीजी ने राजनीति के रथ की बागडोर सँभाली और जनता को संयम और क्रियाशील भाव में भविष्य के युद्ध के लिए तैयार करने लगे तब तमिलनाडु में राष्ट्र कवि के रिक्त स्थान की पूर्ति करते हुए रामलिंगम् का आगमन हुआ। वे गत शताब्दी के आरंभ में ही ही क्षेत्र में उतर चुके थे, परंतु महाकवि भारती के कैलास गमन के बाद उन्होंने तमिलनाडु की जनता में पूरी जागृति लाने का सारा भार अपने कंधों पर उठा लिया।

गाँधीवादी कवि: गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर कवि पूरे गांधीवादी हो गए। उनकी कविताओं ने दक्षिण भारत में स्वतंत्रता आंदोलन को प्रखर बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सत्याग्रही बंधुओं के लिए उनके गीत एक प्रकार के युद्ध–प्रमाण गीत ही थे। उदाहरण के लिए नमक सत्याग्रह के समय उनकी लिखी एक कविता को देखें। गांधीजी ने जब नमक सत्याग्रह का आंदोलन शुरू किया तब तमिलनाडु में राजाजी के नेतृत्व में सत्याग्रही लोग समुद्र से नमक निकालने के लिए वेदारण्यम की ओर जाने लगे। उस समय के अनुकूल कवि ने जो कविता बनायी वह सारे सत्याग्रहियों के लिए 'मार्चिंग–सांग' बन गया था। चलिए हम भी उनके साथ प्रयाण करें। कवि कहता है–

“कत्तियिऩ्ऱि इरत्तमिऩ्ऱि
    युद्दम् ओऩ्ऱु वरुहुदु
सत्तियत्तिऩ् नित्तियत्तै
    नंबुम् यारुम् सेरुवीर्” –
ऑण्डियण्डि कुण्डुविट्टु
    उयिर् परित्तलिऩ्ऱिये
मण्डलत्तिल् कण्डिलाद
    सण्डैयोऩ्ऱु पुदुमैये”

अर्थात्

"खड्ग बिन रक्त बिन
आता युद्ध एक है
सत्यता की नित्यता के
विश्वासी सब आ जुटो।
छिपकर गोली चलाते नहीं
जान किसी की निकालते नहीं
जग में ऐसा कभी न देखा

यह युद्ध नया तथा अजीब है। – उपर्युक्त गीत गाते–गाते सत्याग्रही लोग थकते नहीं थे। गाँधीजी के युद्ध को कवि इस तरह कहता है कि ऐसा युद्ध विश्व में आज तक नहीं देखा। यह बहुत ही अजीब है। इसमें तलवार नहीं चलती और खून नहीं बहता। छिपकर गोली नहीं चलायी जाती है और न किसी की जान निकाली जाती है। यह सत्याग्रह एक नया युद्ध है।

कवि रामलिंगम् पिल्लै और नमक सत्याग्रह: नमक सत्याग्रह के समय राजाजी के नेतृत्व में नमक कानून तोड़ने के लिए वेदारण्यम जानेवाले सभी उन्हीं के गीत गाते हुए जोश से भर उठे कि "खड्ग बिन रक्त बिन युद्ध एक आता है, सत्य की नित्यता में विश्वास रखे, आकर इसमें शामिल हो जाओ।" यह उस समय के स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक 'मार्चिंग सांग' था। यह गीत इतना लोकप्रिय हुआ कि राजाजी ने प्रशंसा करते हुए कहा– "नामक्कुल कवि ने भारतीयार की कमी को दूर कर दिया है।"

कवि रामलिंगम् की गीतात्मक प्रवृत्ति: सन् 1938 में उनकी राष्ट्रीय चेतना की कविताएँ लोगों में क्रांति पैदा कर देती थी। रामलिंगम् में एक सहज गीतात्मक प्रवृत्ति थी और उसे प्रदर्शित करने की अपूर्व कला थी उनमें। उन्होंने गाया–

“अऩ्बिऩोडु अऱिवु सेन्दे आण्मै वेण्डुम नाट्टिले
अच्चमऱ्ऱ तूय वाऴ्विऩ् आऱ्ऱल् वेण्डुम् वीट्टिले
इऩ्बमाऩ वार्त्तै पेसि एऴैमक्कळ् यावरुम्
ऐम्मुडऩ् पिऱन्द पेर्हळ्, ऐऩ्ऱ एण्णम् वेण्डुमे
तुऩ्बमाऩ कोडि कोडि सूऴ्न्दुविट्ट पोदिलुम्
सोऱु तिऩ्ऩ माऩम् विऱ्कुम् तुच्च वाऴ्वु वाऴिन्दडोम्
ऐन्बदान नीतियावुम इंद नाट्टिल् ऐंगणुम्
इळंतमिऴा! ऐऩ्ऱुम् निऩ्ऱे एडेडुत्तुप् पाडुवाय्।”

अर्थात्

प्रेम – ज्ञान का पौरुष चाहिए इस देश में
निर्भय पावन जीवन–शक्ति चाहिए गृह में
सुखद शब्द बोलकर, सारे निर्धन जन यहाँ
सगे भाई बनें हम, विचार चाहिए यहाँ
कोटि–कोटि दुख आकर, घेरकर हमें रहें
रोटी के लिए निर्लज्ज जीवन हम ना जिएँ
यही हमारा लक्ष्य हो, हमारे इस देश में
तमिल के हे युवा! यही धुन गाते चलो।

कवि का राष्ट्र प्रेम: कवि ने माना कि यह राष्ट्र मेरा है। और युवाओं में यही भावना जगाना चाहते थे। राष्ट्र प्रेम जगाने के लिए कवि हर युवा से कहते हैं – "समझो, यह भारत मेरा देश है। कोई गैर आदमी आकर इस पर शासन कैसे करे? अब तक हम सो रहे थे। बस, अब नींद छोड़कर उठो और समझो कि आज से यह भारत मेरा भारत है।"

कवि के शब्दों में देखिए:

“इंदिय नाडिदु ऐऩ्ऩुडै नाडे
ऐऩ्ऱु दिऩम् दिऩम् नीयदैप् पाडु
सौन्दमिल्लादवर् वंदेम्मै आळ
तूंगिक् किडन्ददु पोनदु माळ;
वन्दवर् पोऩवर् यारैयुम् नंबि
वाडिन काल्हळ् ओडिऩ तंबि!
इंदत् दिऩम् मुदल् इंदिय नाडु
ऐऩ्ऩुडै नाडेऩ्ऱ ऐण्णत्तैक् कूडु”

अर्थात्

भारत देश है मेरा देश
कहकर, रोज गाओ इसका यश,
पराया शासन दूर करने
बस अपनी नींद दूर करें,
आये–गए पर भरोसा किया
वह समय आज दूर गया,
इस दिन से यह भारत देश
मेरा ही है, यह विचार धरो। –
"आज से यह भारत देश मेरा है"
कहकर लोगों में एक नया जोश पैदा करते हैं नामक्कल्ल रामलिङ्गम् पिळ्ळै।

भारत मेरी पुश्तैनी संपत्ति: कवि मानते थे कि यह भारत हमारे बाप–दादों का है। अर्थात् यह हमारी पुश्तैनी संपत्ति है। इस संपत्ति को बाँटने की या पंचायत करने का अधिकार किसी को नहीं। पराया कोई इस पर शासन करे तो क्या हम देखते रहेंगे? परायों से भयभीत रहने का वह समय बीत गया। हम अपने पैरों पर खड़े होकर अपनी आज़ादी पाएँगे। उनके शब्दों में देखिए :

“बारद नाडेऩ्ऱऩ् पाट्टऩ् सोत्तु
पट्टयत्तुक् केऩ्ऩ पञ्चायत्तु?
यारिदै वेऱोर् अऩ्ऩियर् आळ?
अञ्चिक्किडन्ददु पोनदु माळ;
वारवर् पोऱवर् यारैयुम नंबि
वाडिऩ्ऩ कालङ्गळ् ओडिऩ्ऩ तंबि!
वीरमुम् दीरमुम् वेऱ्ऱुरैयामो

अर्थात्

मेरे पर दादाओं की, संपदा है यह भारत देश
इसे पट्टा करने की, क्यों करे कोई पंचायत?
पराया इसपर क्यों शासन करे?
बस, इसी क्षण भय को दूर करें;
आये–गयों पर भरोसा किया
वह समय अब, रहा न भाई!
शब्द वीरता भरे व्यर्थ नहीं
लिए बिन आज़ादी, छोड़ेंगे नहीं।

कवि–शब्दों की शक्ति: सच है–साहित्य की शक्ति किसी भी शस्त्र – अस्त्र से कम नहीं। कवियों के शब्द तो परमाणु बमों से भी अधिक विस्फोटक होते हैं। भारत माँ को बंदी पाकर वे फूट पड़ते हैं कि माँ भारत का मन अब दुख में डुबोया हुआ है। इस समय में उसका दुख दूर करना हमारा कर्तव्य है। उसे छोड़कर जाति–पाँति का भेद–भाव को लेकर तू–तू मैं–मैं की चर्चा करना अधम बात है। पहले उस माँ की बेड़ी तोड़ो और सारे विश्व में प्रेम फैलाओ। देखिए, रामलिंगम् पिळ्ळै के शब्द बम की तरह फूट पड़ते हैं –

“इंदियत् ताय्मऩम् नोंदुक् किडक्कैयिल्
इऩमुऱै पेसुहिऩ्ऱदु इऴिवाहुम्;
अंदप् पेरियवळिऩ् अडिमै विलंगऱुत्तु
अऩ्बै निलै निऱुत्तु अकिलमेल्लाम् तमिऴा!”

अर्थात्

भारत जननी का मन, अब व्यथा से पीड़ित
सारे भेद–भाव की, नीचता सब छोड़के
महिमामय माता की, बेड़ियों को तोड़के
प्रेम की प्रतिज्ञा करो, जग पर हे तमिल युवा!

झूठी बातें फैलाकर धर्म के नाम पर लोगों पर अत्याचार करने वाले लोगों को सम्बोधित कर कहते हैं:

“मदम् ऐऩुम् पेयराल्
मक्कळै वदैप्पदै
मानिलम् इऩ्ऩमुम् सहित्तिडुमो?
विदम् विदम् पोय् सोल्लि
वेऱुप्पिऩै वळर्त्तिडिम्
वेऱियरैत् तमिऴर्हळ् मुऱियडिप्पोम्।”

अर्थात्

मजहब के नाम पर
लोगों पर हिंसा करना
कब तक देश सहेगा?
तरह–तरह की असत्यता कह
नफरत फैलाने वाले उन
सनगियों को हराएँगे हम तमिला

भोजन–वस्त्र से बढ़कर आज़ादी: रामलिंगम् पिल्लै का मानना था कि भोजन और वस्त्र से बढ़कर स्वतंत्रता ही प्रधान है। उनका यह भी मानना था कि आजादी विहीन देश बाघ और प्रेत जैसे क्रूर जीवों से भरा जंगल है। इसलिए किसी भी मूल्य पर हम आजादी लेकर ही रहेंगे। वे कहते हैं–

“सुतन्दिरम् इल्लाद नाडु
सूऴ् पुलि पेय् मिकुम् पेरुंकाडु;
ऐदिर्त्तिडुम् तुयर्हळैच् चहित्तिडुवोम्
एंउडै सुतन्दुरम् वहुत्तिडुवोम्.
सोऱुम् तुणिमणि सुहंगळैक् काट्टिलुम्
सुतन्दिर उणर्वे मेलाकुम्
कूऱुम् नलंगळै विलै कोटुत्तायिऩुम्
कोळ्ळत् तहुन्ददु सुतन्दिरमे!”

अर्थात्

स्वतंत्रताहीन जो देश है
बाघ– प्रेत से घिरा जंगल है;
आक्रामक दु: खों को सह लें
पर अपनी आजादी पा लें
बढ़कर रोटी–वस्त्र सुखों से
स्वतंत्रता की चेतना श्रेष्ठ
सारे हितों का मूल्य चुकाकर
पाने योग्य है स्वतन्त्रता।

कवि और हरिजनोद्धार: कवि हरिजनों को भी बंधु जनों की तरह मानते थे। वे लोगों से भी यही कहा करते थे कि वे हरिजनों के साथ प्यार का व्यवहार करें और उनको अपने समान मानें। इसी पर जोर देते हुए वे कहते हैं–

"हरिजन एऴैहळ् तम्मैप्
बंदुक्कळ् पोल परिवुडऩ् नडत्ति
अवरुडऩ् पऴहुदल् वेण्डुम्"

अर्थात्

निर्धन हरिजन सब के
साथ बंधु सा प्रेम करके
मधुर व्यवहार करें उनसे।

आसेतु कुमारी पर्यन्त रिश्ता जोड़ना: कवि का कहना है – "हिमालय से कन्याकुमारी तक के सभी लोगों के बीच आपसी रिश्ता जोड़ें और जाति–पाँति का भेद भाव छोड़कर, धर्म के नाम पर आपसी लड़ाई तजकर शांति से निर्भय होकर राष्ट्र की सेवा करें और दुखी निर्धनों की दरिद्रता दूर कर उनकी मदद करें। और भाषा–भेद दूर कर सभी भाषाओं का समान विकास करें।" उन्हीं शब्दों में देखिए–

सण्डैयऱ्ऱु वाऴवुम्
समदैयाह मोऴिहळ् यावुम्
सलुहै पेऱ्ऱु वळरवुम्
अमैदियाह देस सेवै
अच्चमिऩ्ऱि आऱ्ऱुवोम्
अवदिमिक्क एऴै मक्कळ्
वऱुमै पोह माऱ्ऱुवोम् "

"इमयम् तोट्टु कुमरि मट्टुम्
इंगिरुक्कुम् यावरुम्
इंदियाविऩ् मक्कळेऩ्ऱ
सोंदम् काणाच्च् चेय्हुओम्
समयम् ऐऩ्ऩुम् जाति ऐऩ्ऩुम्

अर्थात्

हिमालय से कुमारी तक
लोग यहाँ के सारे
भारत के ही जनता हैं
बंधु रूप में इन्हें देख
मजहब–जाति भेद के
बिना झगड़े सब जिएँ,
सारी बोलियों का सम
रूप में हो समृद्धि यहाँ,
शांतिपूर्वक से देश–हित की
निर्मय होकर हम सेवा करें,
दुखी–दरिद्र लोगों की
गरीबी हटाकर, विकास करें।

अंग्रेजी का जड़मूल नष्ट करना: कवि रामलिंगम् पिल्लै अंग्रेजी भाषा को जड़मूल नष्ट करना चाहते हैं। वे कहते हैं– "अंग्रेजों ने न केवल हमारे देश को गुलाम बनाया बल्कि हमारे देश की सारी संपदा लूटकर लोगों को दरिद्र बना दिया। और हमारी संस्कृति और देश की कलाओं को भी नष्ट कर दिया है। इसलिए इस अंग्रेजी भाषा को जड़मूल नष्ट कर देना चाहिए तथा इस विश्व के सामने पूर्ण रूप से स्वतन्त्र राज्य का निर्माण करेंगे।"

"आंगिल आट्चि इंदिय नाट्टै
अडिमैयाक्किऩदोडु
तांगळे सुकिक्कुम् तंदिर मुऱैयाल्
दरित्तिरम् तलै विरित्ताड
एँगुळ एऴैक् कुडिहळिऩ् वळत्तै
एप्पुलि ऐऩ्ऩवो उरिञ्चि
ऑँगिय सेल्वम् अरसियल् आऩ्म
उणर्च्चियुम् कलैहळुम् ओऴित्तार्
आदलाल् इंद आंगिलत् तोडबै
अडियोडु अऱिड वेण्डुम्
बूतलम् अऱिन्द पूरणमाम् सुय
राज्जियम् पुदियदाय् अमैप्पोम्"

अर्थात्

अंग्रेजी सत्ता ने भारत को
यूं गुलाम बनाया है
निज–सुख की चालाकी से
दरिद्रता को फैलाया है
निर्धन जनों का सुख
खूब उन्होंने चूसा है
संपदा, राजनीति, अध्यात्म
ज्ञान व कला को बिगाड़ा है,
यही कारण अंग्रेजों को
संपर्क से समूल काटना है।
जय–प्रसिद्ध परिपूर्ण नए।

स्वराज्य का निर्माण करना है– कवि इस पद्य में सही कारण बताकर लोगों को समझाते हैं कि अंग्रेजों को क्यों भगाना है और अंग्रेजी को क्यों जड़मूल नष्ट करना है। इसतरह राष्ट्र प्रेम और भाषा प्रेम, अहिंसा, सत्य, हरिजनोद्धार, नारी स्वतन्त्रता, अंधविश्वास दूर करना, जाति–पाँति का भेद मिटाना, धर्म के नाम पर झगड़ा न करना आदि अनेक विषयों पर लेखनी चलाकर कवि नामकुल रामलिंगम् पिल्लै ने स्वतन्त्रता आंदोलन के समय कवि भारती की जगह पर अमूल्य सेवाएँ कीं।

कवि और जयहिंद शब्द का अर्थ: कवि कहते हैं कि 'जयहिंद' नामक शब्द हममें जीवन भरने वाला मधुर नाद है और वह देश में एकता लाने वाला गीत है। प्रेत की तरह हमें नचाने वाले भेद–भाव की भावनाओं को देश से ही भगाने वाला है। यों कवि जयहिंद शब्द की व्याख्या करके 'जयहिंद' बोलने का महत्व समझाते हैं। देखिए कवि के शब्दों में:

"जय हिंद ऐऩ्ऩिगऱ
जीव नऩ्ऩादम्
देशत्तिल् ओऱ्ऱुमै
सेर्क्किऩ्ऱ गीतम्
पेय्क्कोण्डदेऩ्ऩ
नमैप् पिडित्ताट्टुम्
बेद उणर्च्चियै
नाट्टै विट्टोट्टुम्"

अर्थात्

जयहिंद नामक यह
जीवनदायक सुनाद
है राष्ट्र में एकता
लाने का गाना प्रे
त की तरह
हमें नचाते
भेद–भाव की चेतना
राष्ट्र से भगाने वाला।

कवि का यौवन और उनकी चित्रकारी: महान राष्ट्र कवि रामलिंगम् पिल्लै के यौवन में कान की भयंकर पीड़ा से उनकी श्रवण शक्ति चली गयी थी। पहले वे इससे खिन्न हुए, किन्तु फिर उसे विधि का विधान मानकर सहज रूप से स्वीकार करने लगे। प्रारंभ में उन्होंने चित्रकारी को अपना व्यवसाय बनाया। फिर महात्मा गांधी, महर्षि अरविन्द के विचारों से प्रभावित होकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। अपनी जोश भरी कविताओं के माध्यम से जन जागरण की सेवा में प्रस्तुत हुए।

सुब्रह्मण्य भारती का आशीर्वाद: भारती ने स्वयं उनको आशीर्वाद दिया। जब उनको कवि होने का परिचय मिला तो भारती ने उनको अपनी एक कविता सुनाने का आग्रह किया। रामलिङ्गम् ने स्वरलचित कविता सुनायी। उनकी कविता सुनना था भारती उठ खड़े हो गए और कह उठे "बले पाण्ड्या, इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप कविश्रेष्ठ हैं।" भारतीयार की प्रशंसा के सही पात्र थे कवि रामलिङ्गम्। सुब्रह्मण्य भारती ने रामलिङ्गम् को कवि और विद्वान् होने का प्रमाण पत्र दे दिया मानों भारतीय ने रामलिङ्गम् को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया हो।

कविताओं से आंदोलन में तीव्रता: महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसा–सिद्धांत को सारा भारत स्वीकार कर चुका था। आंदोलन जोर से चल रहा था। तमिलनाडु में लोगों को अपनी जोशीली कविताओं द्वारा जागृति लाना था, ऐसे समय में कवि रामलिङ्गम् अपनी कविताओं द्वारा आंदोलन की गति में तीव्रता लाये। उनकी कविताएँ सुनकर राजाजी भी वाह वाह कर उठे।

नाटक मण्डलियों के लिए गीत रचना: उन दिनों कवि नाटकों केलिये गीतों की रचना करते थे। अधिकांश नाटक राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत थे। सभी नाटक मण्डलियाँ गाँधीवाद का प्रचार करती थीं। महात्मा गाँधी ने स्वयं चरखे पर सूत कातते और लोगों को भी अपने हाथ से सूत कातने और खादी पहनने की बात पर जोर देते थे। कवि रामलिङ्गम् ने चरखे पर गीत लिखकर नाटक मंडलियों को दिया। यह गीत नाटकों के ज़रिए सारे तमिलनाडु में इतना प्रसारित हुआ कि गाँव कस्बे व शहरों में।

तिरुक्कुरळ की व्याख्या लिखना: नमक सत्याग्रह में भाग लेकर सन 1932 में कवि जेल गए। जेल में रहकर उन्होंने संत कवि तिरुवल्लुवर के 'तिरुक्कुरळ' की व्याख्या सरल एवं तात्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल लिखकर प्रस्तुत किया।

कवि की चित्रकारी: रामलिङ्गम् के पिता हेद कन्स्टबिल रहे और वे चाहते थे कि रामलिङ्गम् सब–इन्सपेक्टर बने पर कवि की रुचि चित्रकारी में थी। वे एक महान चित्रकार भी थे। कवि अपनी विविध आवश्यकताओं के लिए चित्रकारी करके जीवन यापन करते थे। उनकी चित्रकारी का एक सजीव नमूना वे अपनी आत्मकथा में खुद साधा करते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि सिम्मनत साहब जो उस समय नामकल के इंजिनियर थे, रामलिङ्गम् के पास आये और बोले कि मेरे मृत बेटे का एक सुन्दर चित्र बनाकर दें। उन्होंने पहले से रामलिङ्गम् की चित्रकारी के बारे में सुनाया। उन्होंने अपने चार साल के मृत संतत का एक सजीव चित्र बनवाना चाहा। बीस दिन के प्रयत्न के बाद रामलिङ्गम् पिठळै ने अपनी कलाकारी से सिम्मनत साहब को खुश कर दिया। और एक घटना है, कवि ने सन 1911 में दिल्ली का दौरा किया और किंग एडवर्ड ग्रीन स्टेडियम में पेंटिंग बनाई और इसके लिए उन्हें स्वर्ण पदक मिला, यह उनकी चित्रकारी का प्रमाण है।"

कवि की रचनाएँ: कवि ने उपन्यास, कथा, निबंध, गद्य, कविता आदि सभी विधाओं में रचनाएँ की हैं। संगीत उपन्यास– 3, निबंध– 12, आत्म कथा– 3, उपन्यास– 5, साहित्यिक समीक्षाएँ– 7, कविता संकलन– 10, लघु काव्य– 5, अनुवादित रचनाएँ– 4 हैं।

उनकी 'ऐन्नु कथे' (मेरी कथा) आत्मकथात्मक पुस्तक एक कहानी की तरह चलती है। 'मलैक कळ्ळण' (उपन्यास), 'कानामल पोन कल्याण पेण' (उपन्यास), 'पिरतल्लें' कविता, 'नामक्खल कविभर पाडल्ल', 'अवनुम अवनुम', (कविता), 'माम् मखळ' (नाटक), 'संगोली' (कविता), 'अरवणे सुंदरस' (नाटक), आदि प्रमुख हैं। मरगत्तवळी', 'कर्पगवळी', 'कादल तिरसप्पण' आदि भी उनके उपन्यास हैं। 'मलैक कळ्ळण' उपन्यास पर एक तमिल फिल्म बनाई गई थी जिसमें एमजीआर नायक बने थे। यह एक क्रांतिकारी फिल्म थी। उस फिल्म का गाना "ऐत्तने कालम तात एमआरङ्गुदय इंद नाट्टिले" बहुत मशहूर है। समाज सुधार का यह गाना था। इसका मतलब है कि और कितने समय तक लोगों को धोखे में ही रखेंगे। उल्लेखनीय बात है कि यह फिल्म राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित है।

कवि की अन्य रचनाएँ: 'प्राथने', 'अवलुम अवनुम', 'संगोली', आदि उनके कविता संकलन हैं। 'माम्म खळ्ळ', 'तमिळ्कू इरवू', 'कवितैगल', तायार कोडुत दसम', 'सेम्दुरुत तमिळ्कों', आदि उनकी मुख्य रचनाएँ हैं। तिरुक्कुरल से बहुत प्रभावित कवि अपने कारावास के समय कैदियों को कुरळ के मूल्य की शिक्षा देते थे। वहाँ रहते उन्होंने तिरुकुरल की जो टीका लिखी उसका नाम है 'तिरक्कुरल पड्ड उरै'।

तिरुक्कुरळ पर उनकी रचनाएँ: 'तिरुक्कुरळुम परिसेल्वहसुम', 'तिरुक्कुरळ् तिडुक्किडवार', 'तिरुक्कुरळ पड्ड उरै', आदि।

कंबर से प्रभावित कवि: कंबर और कंबर रामायण से कवि रामलिङ्गम् पिठळै बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कंबर पर बहुत शोध कर 'कंबनुम वाल्मीकीयुम', 'कंबन कविदै इनबक्कुचिवय' आदि रचनाएँ की।

काव्य–प्रतिभा पर कवि का विश्वास: उनका यह विश्वास था कि काव्य–प्रतिभा मनुष्य की अपनी प्रतिभा नहीं होती है, वरना वह ईश्वर से किसी विशेष प्रयोजन के लिए उसे मिली होती है।

प्रतिज्ञा के पालक: गाँधीजी के पथान्त उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि अब जीवन पर्यन्त गाँधी स्तुति–गीत ही लिखता रहूँगा। वे जीवन पर्यन्त इस प्रतिज्ञा का अक्षरशः पालन करते रहे।

अब हम कवि रामलिंगम् पिळ्ळै की संक्षिप्त जीवनी पर विचार करेंगे।

जन्म: कवि के पिता का नाम वेंकटराम पिळ्ळै था और माताजी का नाम अम्मामणि अम्माळ था। अपने माता–पिता के कवि आठवें पुत्र थे। उनका जन्म नामक्कल जिले के मोहनूर गाँव में 19

अक्टूबर सन् 1888 को हुआ। उनके पिताजी मोहनूर के थाने में हेडकानिस्टेबुल थे।

शिक्षा: उनकी प्रारंभिक शिक्षा नामक्कल स्थित नम्माळवार प्राथमिक विद्यालय में हुई। कोयम्बत्तूर में उन्होंने हाई स्कूल की शिक्षा पायी और तिरुच्ची विशप हीवर कालेज से उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई पूरी की।

व्यवसाय: पहले अपने पिताजी के आग्रह पर नामक्कल के तहसीलदार के कार्यालय में सहायक बने। यह पद उन्हें पसंद नहीं था। फिर वे नामक्कल के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक बने। स्कूल में विद्यार्थियों के बीच में तिलक के समर्थन में अंग्रेजों के खिलाफ बोले। परिणामस्वरूप स्कूल से निकलना पड़ा। फिर तो मित्र श्री नागराज अय्यंगार की सलाह से चित्रकारी को ही अपना व्यवसाय बना लिया। सन् 1900 में श्री रामकृष्ण परमहंस का चित्र बनाकर अपार यश पाया। सार्वजनिक स्थानों में रखने के लिए विवेकानन्द, तिलक, अरविंद घोष, लाजपतराय आदि नेताओं के चित्र बनाकर प्रसिद्ध हुए। सन् 1912 में तमिल के विद्वान पा.वे. माणिक्कम् के बुलाने पर कवि दिल्ली गए। उसी समय पंचम जार्ज किंग का चित्र बनाकर स्वर्ण पदक पाया।

वैवाहिक जीवन: कवि ने अपनी बुआ की पुत्री मुत्तममाळू से सन् 1909 में विवाह किया। पहले उन्होंने अपनी बुआ की पुत्री से विवाह करना पसंद नहीं किया। पर विवाह के बाद पत्नी को समझा और उनसे प्यार किया। इस बात का उल्लेख उन्होंने अपनी 'रेणु कदई' पुस्तक में किया है। सन् 1924 में उनकी पत्नी का देहांत हुआ। फिर पत्नी की छोटी बहन सुंदरतम्माळू से ब्याह किया। इन दोनों की पाँच संतानें थीं।

पत्रकारिता: कवि रामलिंगम् पिळ्ळै पो.तिरिकूटसुंदरम् पिळ्ळै के साथ मिलकर 'तमिलू हरिजन' नामक पत्रिका का संचालन सन् 1946 से 1948 तक किया।

कवि का साहित्यिक जीवन: कवि बचपन से ही नुक्कड़ नाटक और नाटकों के गीतों में लगाव रखते थे। वे प्रसिद्ध नाटक के अभिनेता एस.जी.किट्टुप्पा और अव्वै षण्मुखम् बाल नाटक दल दोनों के लिए गीत लिखकर देते थे। तभी वे सुब्रह्मण्य भारती के गीतों से बहुत प्रभावित थे और उनके गीतों को पढ़कर नई कविता की ओर बहुत आकर्षित हुए थे। सन् 1920 में भारती के पारिवारिक मित्र वेंकट कृष्ण अय्यर से कवि का संपर्क हुआ। तब कनाडा कात्तान नामक जगह पर भारती जी से कवि की मुलाकात हुई। तब भारती जी ने कवि से एक कविता सुनाने को कहा। कवि रामलिंगम् पिळ्ळै ने तुरन्त सुनाया–

"तम्मरसै पिऱर् आळविट्टुविट्टुत्

ताम् वणंगिक् कै कट्टि निबर पेरुम्..."

अर्थात्

अपने राज्य पर शासन करने अन्य को छोड़कर
खुद सविनय हाथ बाँधकर खड़े रहते लोग...बस सुनते ही भारती बोले, "बले पाण्ड्या! (वाह रे वाह!)! निस्सन्देह आप एक कवि हैं।"

स्वतन्त्रता संग्राम का परिणाम है कवि रामलिंगम् पिळ्ळै का मिलना। 15 अगस्त सन् 1949 को उस समय के चेन्नै प्रान्त के राज्यपाल भवननगर महाराज ने उनको आस्थान कवि बनाया। सन् 1954 में साहित्य अकादमी समिति के सदस्य बनाए गए। सन् 1956 और 1962 में तमिलनाडु विधान सभा के राज्य सभा के सदस्य मनोनीत हुए। सन् 1971 में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित हुए। तमिलनाडु के आस्थान कवि के रूप में नामक्कल के जिस मकान में वे रहते थे उस मकान को कवि का स्मारक बनाया गया और उसमें उनके स्मरण में एक पुस्तकालय चल रहा है। चेन्नै के विधान सभा के दस मंजिले भवन के लिए उनके नाम का नामकरण किया गया है। नामक्कल में जिस गली में वे रहते थे उस गली का नाम भी उनके नाम पर बदला गया है। सेलम के संग्रहालय में उनके उपयोग किये सारी वस्तुओं को सुरक्षित रखा गया है। कवि के नाम पर नामक्कल में एक महिला महाविद्यालय की स्थापना की गई है।

कवि की मृत्यु: उनकी मृत्यु 24 अगस्त सन् 1972 में 84 वर्ष की आयु में चेन्नई में हुई।

निष्कर्ष

कवि नामक्कल रामलिङ्गम् पिठळै ने कविता के रूप में वीणा वादिनी सरस्वती की आराधना की थी, उनकी कविता में वह शक्ति थी जो जनमानस को मनचाही दिशा में मोड़ लेती थी। उसका सदुपयोग उन्होंने राष्ट्रीय चेतना जगाने में किया। उनके रचे हुए गीत उन दिनों तमिल प्रदेश के बच्चे–बच्चे की ज़बान पर तैरते करते थे। उनके गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं जितने स्वतंत्रता आंदोलन के समय में थे। उनके सम्पूर्ण काव्य में सनातन भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा झलकती है। ऐसे महान कवि की याद मात्र हमारे लिए नया मार्ग दर्शन करेगी। धन्य है ऐसे शहीद पुरुष।

संदर्भ ग्रन्थ

ऎन् कदै लेखक : नामक्कल रामलिङ्गम् पिळ्ळै
विडुदलै इयक्कत् तमिळ्प् पाडल्हळ् : पॊन. सौरिराजन
भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में तमिळ्नाडु का योगदान : टी.एस.राजु शर्मा
नामक्कल कविञर् मुगिल फाइन आर्ट्स अकादमी –यू ट्यूब

नोट: तमिळ्नाडु के स्थानों के नाम और तमिळ्भाषी साहित्यकारों के नाम आदि का उल्लेख करते समय अक्सर हिन्दी साहित्यकार अंग्रेज़ी के आधार पर गलत उच्चारण और गलत लिप्यन्तरण कर बैठते हैं। इसलिए इस आलेख में व्यक्तियों और स्थानों के नाम का लिप्यन्तरण करते समय वैसा ही दिया गया है जैसा तमिळ् में बोला व लिखा जाता है।